7/12/19 E

[This question paper contains 4 printed pages]

Your Roll No. : .....

Sl. No. of Q. Paper : **3342**

Unique Paper Code : 62051102

Name of the Course : **B.A.(Programme) - CBCS**

Name of the Paper : Hindi-A

Semester : I

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 75***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

(क) जांनि बूझि साचहिं तजैं, करैं झूठ सूँ नेह।
ताकी संगति राम जी, सुपिनैं ही जिनि देहु।।
जैसी मुष तैं नीकसै, तैसी चालै नाहिं।
मानिष नहीं ते स्वान गति, बांध्या जमपुर जाहिं।।

P.T.O.

nunotes.in

अथवा

मेरी भवबाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परे, स्याम हरित दुति होय।।
फिरि फिरि चितु उत हीं रहतु, टुटि लाज की लाव।
अंग-अंग-छवि-झर मैं भयौ भौंर की नाव।।

(ख) नहीं ठिकाना कालिदास के
व्योम-प्रवाही गंगाजल का,
ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए वह छायामय
बरस पड़ा होगा न यहीं पर,
जाने दो, वह कवि-कल्पित था

अथवा

अद्वितीय हर एक है मनुष्य
औ' उसका अधिकार अद्वितीय होने का
छीनकर जो खुद को अद्वितीय कहते हैं
उनकी रचनाएँ हों या उनके हों विचार
पीड़ा के एक रसभीने अवलेह में लपेट कर
परसे जाते हैं तो उसे कला कहते हैं ।

(ग) गरुड़ को दावा जैसे नाग के समूह पर दावा नागजूह पर सिंहसिरताज को।
दावा पुरहूत को पहारन के कुल पर दावा सबै पच्छिन के गोल पर बाज को।
भूषन अखंड नवखंड महिमंडल में तम पर दावा रबिकिरन समाज को
पूरब पछांह देस दच्छिन तें उत्तर लौं जहाँ पातसाही तहाँ दावा सिवराज को।

अथवा

हिमाद्रि तुंग शृंग से, प्रबुद्ध शुद्ध भारती।
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती-
अमर्त्य वीर पुत्र हो दृढ़-प्रतिज्ञ सोच लो,
प्रशस्त पुण्य पंथ है- बढ़े चलो -बढ़े चलो !

2. किसी एक कवि का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

(क) भूषण

अथवा

(ख) नागार्जुन

3. 'कबीर' की साखियों का सार लिखिए। 10

अथवा

भूषण के कवित्तों का प्रतिपाद्य लिखिए।

4. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में प्रकृति सौन्दर्य का वर्णन कीजिए। 10

अथवा

'कला क्या है' कविता की मूल संवेदना बताइए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : 3×5=15

(क) रामभक्ति काव्य धारा

(ख) छायावाद

(ग) द्विवेदी युगीन साहित्य

(घ) रीतिकाल

(ङ) संपर्क भाषा के रूप में हिंदी

(च) खड़ीबोली

(छ) आदिकाल की विशेषताएँ

nignotes.in